सक्सेस एंड एबिलिटी

ABILITY

विकलांगों के प्रतिभा की दिशा में

फरवरी 2018

अग्रणी बाइकर, मॉडल, एथलीट

सोफिया ज्यो

शारीरिक छवि
कल्पित मानक

लैंगिकता
सामाजिक पूर्वाग्रहों का आंतरिककरण

शिक्षा
हटके और भिन्न सोचें

संपादकीय नज़र

दोस्तों

आशा करती हूँ कि आपने हमारे जनवरी अंक के डिजिटल संस्करण का आनंद उठाया होगा। आप पाएंगे कि जनवरी का अंक जितना गैजेट्स पर था, यह अंक लोगों के बारे में है। लोगों द्वारा सृष्टित जीवन की खूबसूरती।

प्रौद्योगिकी तेजी से विकसित हो सकता है , लेकिन दुनिया का गठन मानव जाति से ही होता है। गैजेट कितने भी शानदार क्यों न हो , हम अभी भी मनुष्यों से निपटना चाहते हैं। हम सब जानते है कि मशीन आखिरकार मशीन ही है ... उसके पूर्णता तक पहुँचने के प्रयास के बावजूद । पूर्ण या अपूर्ण, हमे ऐसी अपूरणीय मानव जाति की ही ज़रूरत है। हमारे साथी मनुष्यों के साथ बातचीत करने की इच्छा मानव प्रकृति है फिर हम लोग के बीच अंतर क्यों करते हैं? फिर इतना भेदभाव, विभाजन, पक्षपात, सीमांकन क्यों? क्या हमें मानवता की विविधता की जश्न मनाने की जरूरत नहीं है? अपने लेख में डॉ. श्रुति मोहपात्रा सामान्यता के पुनर्परिभाषण के बारे में बात करती हैं।

“खुद को स्वीकार करें, अपने आप से प्यार करें, और आगे बढ़ें। यदि आप उड़ना चाहते हैं, तो आपको उन चीज़ों को छोड़ना होगा जो आपको नीचे खींचती है। “ यह समय है खुद को आज़ाद करने का, हम कौन हैं, क्या हैं , कैसे है ... इन सबके बावजूद प्यार पाने का। सोफिया ज्यो हमारे आवरण कहानी की नायिका, अपने तरीके से यह कर दिखाती है।

डॉ. केतना मेहता के नियमित लेख में , इस बार, वह हमें कुछ सुधारक-योद्धा के बारे में बताती है जिन्होंने आज के सामान्य और उबाऊ स्कूल शिक्षा में ऐसे निराले परिवर्तन लाने की कोशिश की है जो बच्चों को असली शिक्षा के प्रति प्रेरित करता है।

निधि गोयल ऐसे समाजिक पूर्वाग्रहों और अनुचितता, जो विकलांग महिलाओं के लिए यौन शिक्षा को नकारता है, पर सवाल उठाती है । क्या हम सब - विकलांग हो या गैर-विकलांग - सपने और इच्छाओं के बुनियादी अधिकार के , प्यार करने और प्यार पाने के हकदार नहीं हैं ?

इसके अलावा, इस मानव-केंद्रित अंक में और भी बहुत कुछ है। पढ़िए ... और हमे अपने विचारों, शब्दों, और राय को लिखना मत भूलिए ....

जयश्री रवींद्रन

संपादक	जयश्री रवींद्रन	**उप संपादक**	हेमा विजय
प्रबंध संपादक	जानकी पिल्लई	**क्रिएटिव डिज़ाइनर**	मेरी पर्लिन
सह संपादक	सुचित्राअय्यप्पा	**हिंदी अनुवादन**	मालिनी. क

संवाददाता

चेन्नई	बैंगलोर	हैदराबाद	नई दिल्ली
संदीप कनबर +919790924905	गायत्री किरण +919844525045	साई प्रसाद विश्वनाथ +91810685503	अभिलाशा ओझा +919810557946

गुरुग्राम	पुणे	यु.इस. ऐ
सिद्धार्थ तनेजा +919654329466	साज़ अगरवाल +919823144189	डॉ. मदन वसिष्टा +1(443)764-9006

अनंतनाग	दुर्गापुर	भुवनेश्वर
जावेद अहमद तक +911936 211363	अग्शु जाजोडिया +919775876431	डॉ. श्रुति मोहपात्रा +91 6742313311

प्रकाशक : एबिलिटी फाउंडेशन संपादकीय कार्यालय : नया न. 23, 3rd क्रॉस स्ट्रीट, राधाकृष्णन नगर, तिरुवान्मयूर, चेन्नई , इंडिया फ़ोन/फैक्स : 91 44 2452 0016 / 2440 1303. इ- मेल: magazine@abilityfoundation.org. ऐबिलिटी फाउंडेशन की ओर से जयश्री रवींद्रन द्वारा प्रकाशित, 27, 4th मेइन रोड, गाँधी नगर, चेन्नई 600 020. फ़ोन: 91 44 2452 0016. वेब साइट: www.abilityfoundation.org

समाचार और विचार साझा करने के लिए, हमें इस इ-मेल पर लिखें magazine@abilityfoundation.org

Rights and permissions: No part of this work may be reproduced or transmitted in any form or by any means, without the prior written permission of Ability Foundation. Ability Foundation reserves the right to make any changes or corrections without changing the meaning, to submitted articles, as it sees fit and in order to uphold the standard of the magazine. The views expressed are, however, solely those of the authors.

समाचार और टिप्पणियां

समावेशन को समझाने के लिए गुड़िया

एशले मार्टिन-हानोन, ईस्टर सील्स, (Easter Seals) एक अमेरिकी आधारित संगठन जो विकलांगता पर समाज में व्यवहारिक बदलाव लाने के लिए काम करती है, के संचार समन्वयक, बच्चों को समावेशन के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए, विकलांग गुड़ियों के साथ प्राथमिक स्कूलों में प्रस्तुति करती है। इन गुड़ियों का इस्तेमाल विभिन्न प्रकार के विकलांगता के बारे में प्राथमिक छात्रों को अवगत करने के लिए किया जाता है। हर चरित्र एक अलग प्रकार की विकलांगता का प्रतिनिधित्व

करता है, और वे कक्षा को यह सोचने में मज़बूर करता है कि विभिन्न विकलांगता वाले उन लोगों को कैसे समायोजित किया जाय। "हम शारीरिक, संवेदी, और अदृश्य विकलांगों के बारे में बात करते हैं ", मार्टिन-हानोन कहती है। "गुड़िया वास्तव में प्रस्तुति के अहम हिस्सा हैं। इनमें शारीरिक विकलांगता, संवेदी विकलांगता और अदृश्य विकलांगता वाले गुड़ियाएं हैं। " इस साल की प्रस्तुति में एक नई परस्पर संवादात्मक चरित्र परियोजना शामिल था। प्रत्येक वर्ग को एक कार्ड मिला जिसमे कुछ पात्र छपा था। इन पात्रों वाले कार्डों को कक्षाओं में लटका दिया जाता है ताकि विद्यार्थियों को उनके रोजमर्रा की जिंदगी में समावेशन के बारे में सोच सके, जैसे व्हीलचेयर उपयोग करने वाले सहपाठी के लिए उनके घर को अभिगम्य कैसे बना सकते हैं।

स्रोत : सीबीसी न्यूज़

एसिड अटैक के शिकार लोगों के लिए कोटा

कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग (डीओपीटी) के 28 जनवरी 2018 के आदेश के अनुसार, एसिड अटैक के शिकार लोगों और मानसिक बीमारियों, आटिज्म और बौद्धिक विकलांग लोगों के लिए अब केंद्र सरकार की नौकरियों में कोटा दिया जाता है। डीओपीटी ने केंद्र सरकार के विभागों में अंधेपन, दृष्टि क्षीणता, बधिरों या सुनने में कठिनाई वाले लोगों, सेरिब्रल पाल्सी, कुष्ठ रोग, बौनावाद, मस्कुलर डिस्ट्रॉफी , और एसिड अटैक के शिकार के लिए हर पद में 1% आरक्षित करने का निर्देश दिया है। इन पदों में 1% ऑटिज्म और मानसिक बीमारियों, बौद्धिक विकलांग और विशिष्ट सीखने में विकलांग लोगों के लिए भी आरक्षित किया जाएगा। सभी सरकारी संगठनों में शिकायतों की जांच करने के लिए शिकायत निवारण अधिकारियों को तैनात करना होगा। कोई भी विकलांग व्यक्ति अगर भेदभाव का सामना करता है तो इसके बारे में नामित अधिकारी के पास शिकायत दर्ज कर सकता और इस शिकायत पर दो महीने के भीतर कार्रवाई की जानी चाहिए और जिस व्यक्ति ने शिकायत दर्ज किया उसे सूचित किया जाना चाहिए।

स्रोत : द बेटर इंडिया

निराशा दायक बजट

1 फरवरी को प्रस्तुत केंद्रीय बजट में विकलांगों के लिए मौजूदा योजनाओं के लिए अल्प निधि निर्धारण, नई योजनाओं की कमी, सरकार की नीतियों में अस्पष्टता के कारण कार्यकर्ता असंतुष्ट है। राष्ट्रीय विकलांग अधिकार मंच (एनपीआरडी) ने एक बयान जारी किया है जिसमें कहा गया है कि केंद्रीय बजट यह धारणा प्रस्तुत करता है कि विकलांग लोग वित्त मंत्री के तेजी से विकास हो रहे अर्थव्यवस्था के अंग नहीं हैं। कार्यकर्ता शिवाजी गाडे कहते हैं कि सरकार ने विकलांग व्यक्ति अधिनियम के कार्यान्वयन की योजना (सिपडा) के लिए 300 करोड़ रुपये नियत किया हैं। उन्होंने बताया कि सरकार के सुगम्य भारत अभियान के तहत परियोजनाओं को भी इस राशि से वित्त पोषण किया जाना चाहिए और प्रश्न करते हैं की इसके बाद विकलांगों के पुनर्वास के लिए कितना पैसा बचेगा। सुगम्य भारत अभियान के अंतर्गत 600 सार्वजनिक भवनों, 600 वेबसाइटों और परिवहन व्यवस्था को विकलांगों के लिए अभिगम्य बनाने का लक्ष्य है। जबकि सरकार ने दिव्यांगता अधिकार विधेयक 2016 (आर पी ए डी) के माध्यम विकलांगता की श्रेणियों की संख्या को 7 से बढ़ाकर 21 बनायीं फिर भी, स्थानीय निकायों में विकलांगों के लिए आवंटित धनराशि 3% पर है, गाड़े ने कहा।

स्रोत : द टाइम्स ऑफ़ इंडिया

नियंत्रण को वापस लाने के लिए रोबोटिक दस्ताने

कोरियाई फर्म नियोफेक्ट ने रीढ़ की हड्डी की चोट के कारण पक्षाघातवाले लोगों के तत्काल समाधान के लिए 'नियोमनो' रोबोटिक दस्ताने विक्सित किया है। यह दस्ताना उन लोगों का मदद कर सकता है जिन्होंने सरल कार्य जैसे कप उठाना, पृष्ठों को बदलना, दरवाजे खोलने और बर्तनों का उपयोग करने की क्षमता खो दी है। कंपनी ने एफडीए (FDA) अनुमोदन के लिए आवेदन किया है और वर्ष के अंत तक डिवाइस को बाजार में लाने की योजना बना रही है। दस्ताने में, एक चमड़ा, हाथ की एड़ी, दो उंगलियों और एक अंगूठे को लपेटता हैं। पूरे हाथ को ढकने वाले समाधानों के विपरीत, नियोफेक्ट के मॉडल में केवल

तीन अंक होते हैं, जो कि अधिकांश कार्यों को निष्पादित करने के लिए पर्याप्त है। एक बड़ा बैटरी मॉड्यूल हाथ के पुल पर स्थित है, और पूरा इकाई नियंत्रण कक्ष से जुड़ा है।

स्रोत : टेकक्रंच

सुगम्यता अद्यतन

यह रही एक उपयोगी सूची। माइक्रोसॉफ्ट ने माइक्रोसॉफ्ट टेक्नोलॉजीज (विशेष रूप से विंडोज 10 और ऑफिस 365) में निर्मित सभी एक्सेस-योग्यता सुविधाओं की एक सूची जारी की है। इन सुविधाओं को दृष्टि, संज्ञानात्मक, श्रवण और गतिशीलता की व्यापक श्रेणियों के तहत सूचीबद्ध किया गया है ताकि विशिष्ट विकलांगता वाले लोग अपने लिए बेहतरीन सुविधा के बारे में देख सके। इस सूची को एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण बिंदु या 'स्वे' (दृश्य विवरण, सूचियों और दस्तावेज़ों को बनाने के लिए एक माइक्रोसॉफ्ट उत्पाद) के रूप में देख सकता है। उदाहरण के लिए, 'विज़न' के अंतर्गत सूचीबद्ध अभिगम्य सुविधाओं में अक्सेसबिलिटी चेक्केर, अल्टरनेटिव टेक्स्ट टूल, आटोमेटिक अल्टरनेटिव टेक्स्ट, कलर फिल्टर्स, कंसिस्टेंट कीबोर्ड शॉर्टकट्स, एडज रीडिंग मोड, गाइडेड सेटअप,हाई कंट्रास्ट, कीबोर्ड ओनली, लाइव टाइल साईंसेस, मोनो

ऑडियो, नरेटर, ऑफिस लेंस, ऑफिस टेम्पलेट्स, रीड अलाउड , सीइंग आल, टेल मी, टेक्स्ट स्केलिंग, थीम्स इन ऑफिस, टच फीडबैक और विंडोज हेलो शामिल है ।

स्रोत : असिस्टीव टेक्नोलॉजी ब्लॉग

फैशन जगत हो या बाइक चलाना, वह सबके लिए प्रेरणास्रोत है !

अग्रणी बाइकर, मॉडल, एथलीट ... सोफिया ज्यो को, जीवन में आगे बढ़ने से कुछ भी रोक नहीं सकती , अपर्णा बाबू जॉर्ज लिखती है

जिस दिन मैं कोच्चि की 23 वर्षीय मॉडल सोफिया ज्यो से मिली, उसी दिन वह तीसरे इंडियन डेफ एक्स्पो (Indian Deaf Expo) में शीर्ष पुरस्कार जीतकर, कोलकाता से अकेले यात्रा कर पहुंची थी। वह आनंद मग्न थी और मुस्कुरा रही थी। उसके घर की दीवारों को सुशोभित कर रहे तस्वीरें और ट्राफियां उसकी विभिन्न उपलब्धियों का संकेत दे रहे थे , हर एक पहले वाले से अधिक प्रभावशाली ।

अपर्णा
बाबू जॉर्ज

सोफिया ने कई मानक स्थापित किए हैं। वह हल्के मोटर वाहन और गियर के साथ मोटर साइकिल के लिए ड्राइविंग लाइसेंस प्राप्त करने वाली केरल की पहली बधिर महिला है। वह बुलेट मोटरसाइकिल की सवारी करने वाली भारत और शायद विश्व की भी पहली बधिर महिला है। वह मिस डेफ इंडिया और मिस डेफ वर्ल्ड, प्राग(Prague), चेक गणराज्य में भाग लेने वाली दक्षिण भारत की पहली बधिर महिला है। वह भारत में पहली बधिर महिला है जो गैर-विकलांग मॉडल के साथ रैंप पर चली है। अमृता चैनल पर प्रस्तुत एक रियलिटीशो सुपर मॉडल में, गैर-विकलांग प्रतिभागियों के साथ भाग लेते हुए, जीतने वाली पहली बधिर महिला है। गोला फेंक में वह आठ बार राज्य और तीन बार राष्ट्रीय चैंपियन रह चुकी है। वह केटीएम 390 आरसी (KTM 390 RC) बाइक को चलाने वाली देश की पहली बधिर महिला है। स्पष्टतःसोफिया को जीवन में आगे बढ़ने से कुछ भी रोक नहीं सकता ।

सोफिया चाहती है की लोग उसे उसके प्रतिभा के आधार पर देखे न की उसके विकलांगता के आधार पर ।

सोफिया जन्म से ही बधिर थी और बोल भी नहीं सकती थी , फिर भी उसके माता-पिता ने उसके साथ अलग बर्ताव नहीं किया , हमेशा उसका समर्थन करते थे और उसके हर कामयाबी में उसके साथ थे। स्कूल में, वह एक राष्ट्रीय स्तर की शॉटपुट चैंपियन थी और एथलीट के रूप में प्रशिक्षितहोने के लिए उत्सुक थी। कॉलेज में, फैशन की ओर उसकी रुचि बढ़ी और उसने इस उद्योग में प्रवेश किया। एक एथलीट और फ़ैशन मॉडल के लिए निर्धारित शारीरिक प्रशिक्षण काफी अलग हैं, फिर भी सोफिया इस परिवर्तन को अनायास कर पायी । इसके अलावा , वह रियलिटी शो सुपरमॉडल में विजयी बनी, जहां उसने पूरे

केरल से स्थापित मॉडल को हराया। इसके बाद उसने प्राग में विश्व डेफ पेजेंट में भाग लिया और जीत हासिल किया। इस उपलब्धि को प्राप्त करने वाली वह पहले दक्षिण भारतीय महिला थी। उनका अगला कदम फिल्म उद्योग था जहां उन्होंने 'बेस्टविशेस'(Best Wishes) फिल्म में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और 'समर इन बैंकॉक' (Summer in Bangkok) में एक पात्र के लिए डब किया।

बातचीत के दौरान , सोफिया कहती हैं कि उनका नया जुनून बाइक रेसिंग है, जिसके लिए वह कोयंबटूर में प्रशिक्षण ले रही है। यह एक प्रभावशाली महिला है जो नई चीजें सीखने, नवाचार कौशल हासिल करने के लिए उत्सुक है और हमेशा आशावादी हैं।

फिर भी, अपनी सारी उपलब्धियों के बावजूद, सोफिया अपने लिए एक कैरियर बनाने में , जिससे वह अपने पैरों पर खड़े हो सके , में असमर्थ है । हालांकि वह खुद पर और अपनी क्षमताओं पर आश्वस्त है, बाकी लोग उसके विकलांगता के कारण उसपर विश्वास नही करते । सोफिया चाहती है की लोग उसे उसके प्रतिभा के आधार पर देखे न की उसके विकलांगता के आधार पर ।

उदाहरण के लिए, सोफिया जब बाइक रेसिंग का अपना सपना साकार करना चाहती थी , तो ट्रेनर ने तुरंत इस विचार को बरखास्त कर दिया, और कहा कि सम्बवतः एक अंधा व्यक्ति रेस में भाग ले सकता है लेकिन एक बधिर के लिए यह नामुमकिन है । सोफिया और उसके भाई - जो भी बधिर है , दोनों बाइक चलते है जिसे उन्होंने खुद अपने आप सीखा। लेकिन सोफिया को खुद को साबित करने का मौका नहीं दिया गया। अंत में, उन्हें कोयम्बटूर में एक ट्रेनर मिला और सोफिया के पिता उसके प्रशिक्षण का खर्चा उठाते हैं ।

सोफिया जब बाइक रेसिंग का अपना सपना साकार करना चाहती थी , तो ट्रेनर ने तुरंत इस विचार को बरखास्त कर दिया, और कहा कि सम्बवतः एक अंधा व्यक्ति रेस में भाग ले सकता है लेकिन एक बधिर के लिए यह नामुमकिन है ।

इसी तरह, रियलिटी शो, सुपर मॉडल, को जीतने के बाद सोफिया को अवसरों के कई दरवाजे खुलने चाहिए। लेकिन अफसोस, उद्योग में खुद को स्थापित करने के लिए उसका संघर्ष जारी है। एक अंधे या शारीरिक विकलांगता वाले व्यक्ति के विपरीत, पहली नज़र में सोफिया की विकलांगताका पता नहीं चलता। नतीजतन, वह सहानुभूति और सहनशीलता जिसकी उसे आवश्यकता है, प्राप्त नहीं होता। हर प्रतियोगिता जिसमें वह भाग लेती है, सोफिया एक विजेता उभरती है और सभी को प्रभावित करती है। हालांकि, वह यह समझने की कोशिश कर रही है कि अपने इन उपलब्धियों के बावजूद खुद के लिए एक स्थिर भविष्य क्यों नहीं बना पा रही है।

उनका अगला बड़ा सपना हिमालय में बाइक चलना है । जब मैंने उससे पुछा कि वह दुनिया में क्या योगदान देना चाहती है, उसने कहा कि वह उसके जैसे बच्चों के सपनों को साकार करने में उनकी मदद

यह एक प्रभावशाली महिला है जो नई चीजें सीखने, नवाचार कौशल हासिल करने के लिए उत्सुक है और हमेशा आशावादी हैं।

करना चाहती है और एक ऐसी दुनिया को देखना चाहती है जहाँ किसी भी तरह के पूर्वाग्रहों के बिना लोगों के साथ समान रूप से व्यवहार किया जाता हो। सोफिया बात करना पसंद करती है और जो लोग उससे परिचित हैं वो उसे समझ पाते हैं। लेकिन ज्यादातर लोगों को इतना सब्र नहीं है कि वे उसे अपने आप को अभिव्यक्त करने का मौका दें और उसे टाल देते हैं ।यह उसे गहरी तरह से प्रभावित करती है।

बाहरी तौर पर , सोफिया एक सामान्य बीस वर्ष की युवती है। लेकिन आंतरिकता से सोफिया भविष्य के लिए लड़ रही है जो हम में से बहुतों को आसानी से प्राप्त है और जिसका महत्व समझ नहीं पाते । ■

क्या यौन अधिकार सर्वप्रथम मानव अधिकार नहीं हैं ?

निधि गोयल

समाज विकलांग महिलाओं के लिए यौन शिक्षा की पहुंच, सपने देखने, इच्छाएं रखने, प्यार पाने और जताने के मूल अधिकारों में समावेशन को नकारती है और कहीं न कहीं, विकलांग महिलाओं ने इन आवाजों को अंतर्निहित किया है, निधि गोयल, कार्यक्रम निदेशक, सेक्शुवालिटी एंड डिसेबिलिटी, पॉइंट ऑफ़ व्यू लिखती हैं।

"एक महिला के निजी भाग में कितने छेद हैं? "जब यह प्रश्न हमारी लैंगिकता और विकलांगता कार्यशालाओं के प्रतिभागियों से पुछा गया, तो हमने पाया की अक्सर गैर विकलांग महिलाएं - प्रशिक्षकें / शिक्षक/ विकलांग अधिकार संगठन के स्वयंसेवक- भी शर्मिन्दित हैं। गुवाहाटी में एक ऐसी कार्यशाला में, विशेष शिक्षकों ने बहुत झिझकते जवाब दिया: दो, एक पेशाब करने के लिए, और एक मलत्याग के लिए।

इस परिदृश्य मुंबई, पुणे और कई अन्य शहरों में दोहराया गया था।

गैर विकलांग महिलाओं के बीच भी अपने स्वयं के शरीर और यौन शिक्षा के ज्ञान का स्तर इतना ही है, जबकि विकलांग समकक्षों की तुलना में उन्हें जानकारी प्राप्त करने का स्रोत और अवसर कहीं ज्यादा है।

फिर, जो महिलाएं अपने शरीर को देख नहीं सकतीं, जो अपने स्वयं के शरीर के कुछ भागों तक पहुंच नहीं पाती या महसूस नहीं कर पाती , अपने शरीर को कैसे समझ सकते है या उसके साथ कैसे संबंधों निर्माण कर सकते हैं? वे अपनी लैंगिकता के साथ कैसे जुड़ेंगे? इन प्रश्नों को हमने शायद कभी पुछा ही नहीं या इन पर गौर नहीं किया ।

समाज के गहराई में छुपी सबसे लोकप्रिय धारणा यह है कि विकलांग लोग अलैंगिक है। उन्हें कोई इच्छा नहीं है और यौन संबंध और लैंगिकता उनके लिए महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। इस तरह की मान्यताओं और महिलाओं के लैंगिकता के प्रति समाज के दृष्टिकोण - जो कि नियंत्रण और दमन का है - का नतीजा विकलांग महिलाओं और लड़कियों के लैंगिकता

का एक जटिल मसला। और इस बात को बार-बार दोहराया जाता है कि "विकलांग महिलाओं को इस जानकारी की ज़रूरत नहीं है !"

ऐसे समाज में जहां हम लगातार उत्तम और सुन्दर शरीर की छवियों को दिखाते हैं और उनका जश्न मनाते हैं, विकलांग औरत का शरीर केवल सुधार, देखभाल, प्रबंधन या सहायता के लिए बन जाते हैं। विकलांग औरतों के लिए, उनके शरीर को अभिराम या व्यथा, या जश्न की दृष्टि से देखने केलिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता है। लैंगिकता से जुड़े धारणाएं, शरीर के प्रति दृश्टिकोण और समाज में स्थापित लिंगीय भूमिकाएं इन सब के कारण विकलांग महिलाओं को संभावित सहभागी, पत्नी या माँ के रूप में न देखकर उन्हें और अपमानित किया जाता है।

हमारे एक कार्यशाला में - जिसमे 17 विकलांग महिलाएं और लगभग इतने ही गैर विकलांग महिलाएं थी - हमने पुछा 'कौन शादी करना चाहती है ?' सभी विकलांग महिलाओं का उत्तर 'नहीं' था। इसका वजह पूछने पर पता चला कि, उन्होंने बताया गया है कि केवल 'परिपूर्ण' और 'सामान्य' महिलाएं 'अच्छी पत्नियां ' बन सकती हैं और इसलिए कोई भी उनसे शादी नहीं करेगा। अस्वीकार किए जाने के बजाय, उन्होंने शादी के बुनियादी विचार को ही नकार दिया। उन्होंने न केवल अच्छे पत्नियों के सांस्कृतिक परिभाषा को अंदरूनी रूप से स्वीकार किया था, बल्कि उनकी नकारात्मक धारणा थी कि वे अन्य 'सामान्य' महिलाओं से भी कम है। समाज में नकारात्मक विचारें विद्यमान हैं और विकलांग व्यक्तियों ने विशेषकर विकलांग महिलाओं ने इन आवाजों को अंतर्निहित कर लिया है । इसका कारण यह है कि, हमारे जैसे देश में, महिलाओं की आवाज को अक्सर चुप्पी या दबायी जाती है, उन्हें ठुकराया जाता है या दबदबाया जाता है, उन्हें अपने आवाज़ व्यक्त करने की इजाजत नहीं होती है। इसलिए समाज इस विषय पर जो भी कहती है विकलांग महिलाओं उनपर विश्वास करते है और उसे दोहराते हैं। यह जीवनसाथी के विकल्पों के बारे मेंउनके बात से भी यह बहुत स्पष्ट है। वे या तो मानते हैं कि "दान की बछिया के दाँत नहीं गिने जाते" और जो कोई भी उनसे संबंध जोड़ने के लिए तैयार है, वे उन्हें स्वीकार कर लेते हैं, या वे विकलांगता के आधार पर जीवनसाथी को अस्वीकार कर वे भी इस कलंक को जारी रखते हैं।

ऐसे समाज में जहां हम लगातार उत्तम और सुन्दर शरीर की छवियों को दिखाते हैं और उनका जश्न मनाते हैं, विकलांग औरत का शरीर केवल सुधार, देखभाल, प्रबंधन या सहायता के लिए बन जाते हैं।

लेकिन लैंगिकता यौन संबंध नहीं होता, और न ही यह शारीरिक संबंध है। यह इच्छाओं, सपनों और स्वयं की अभिव्यक्ति के बारे में है । वाराणसी के एक कार्यशाला में, एक लड़की ने हमें बताया कि वह एक साड़ी पहनना चाहती है, लेकिन यह इच्छा व्यर्थ है, क्योंकि उसके निचले हिस्से "काम नहीं करते"। आगे बात-चीत करने पर उसने यह प्रकट किया कि जब वह अपने आप को सजना और सँवारना चाहती थी तब उसे बार बार यही बताया गया था। अक्सर, विकलांग लोगों से पुछा जाता है कि "आप क्यों सजना चाहते हो?", "आप जश्न मानना चाहते हैं?", "आप मनोरंजन क्यों चाहते हैं?", आदि।

इसके पीछे का मकसद यह है कि विकलांग महिलाओं को सिर्फ विकलांग के रूप में देखा जाता है , और उनकी सम्मिलित होने की आवश्यकता, प्यार करना, इच्छाएं होने स्वीकार्य नहीं हैं, वे "सामान्य" इंसानों से कम माने जाते हैं।

लैंगिकता और व्यक्तित्व के बारे में भेदभावपूर्ण मान्यताएं विकलांग महिलाओं को प्रभावित करती है। इससे वे भेदभाव, दुर्व्यवहार या हिंसा के प्रति अधिक भेद्य हो जाते है। इससे भी ज्यादा डरावनी बात यह है कि यह दुराचार को पहचानने की उनकी क्षमता को कम करता है। मुम्बई की एकविकलांग बालिका बताती है कि हर रोज , मदद मांगने के दौरान, सड़कों में उसे अनुचित रूप से छूवा जाता है, और वह कहती है कि यह हर दिन की वास्तविकता और विकलांगता के अनुभव का एक हिस्सा है, दुराचार नहीं। और जब वे दुराचार या उत्पीड़न का सामना करते है तब उसे व्यक्त करने से डरते है।

लैंगिकता और व्यक्तित्व के बारे में भेदभावपूर्ण मान्यताएं विकलांग महिलाओं को प्रभावित करती है। इससे वे भेदभाव, दुर्व्यवहार या हिंसा के प्रति अधिक भेद्य हो जाते है।

"जब यह चाचा घर आए, तो वह हमेशा मुझे मदद करने का प्रयास करते थे, और इस प्रक्रिया में मुझे अनुचित तरीके से छूता था। इसलिए जब भी वह घर आते मैं सोने की बहाना करती। एक दिन, मेरे पिता ने बहुत गुस्से में कहा, 'वह आपकी इतना मदद कर रहा है। आप उसके साथ इस तरह से व्यवहार नहीं कर सकते। कम से कम कोई आपके साथ अच्छा बर्ताव कर रहा है और आपकी सहायता कर रहा है। "यह अहमदाबाद में हमारे एक प्रतिभागी के द्वारा साझा किया गया था। दिलचस्प बात यह है कि जब कोई विकलांग महिलाओं को मदद करता है, तो उन्हें उसे स्वीकार करने के लिए मजबूर किया जाता है - वे चाहे या न चाहें।

हमारे कार्यशाला लैंगिकता के वर्णक्रम के बारे में बात करते हैं: शरीर, यौन स्वास्थ्य, अभिविन्यास, इच्छाएं, यौन संबंध, प्रजनन, रिश्ते, विवाह, पेरेंटिंग, हिंसा और दुराचार। विकलांग महिलाओं को समझाने के लिए हम सुगम सामग्री का उपयोग करते हैं। हमें बहुत चुनौतियों का सामना करनापड़ता है। हमारी सबसे बड़ी चुनौती, कलंक का गहरा आंतरिककरण जो विकलांग महिलों के मन में है या संवेदनशील विषयों के बारे में बातचीत शुरू करना नहीं है, बल्कि विकलांग संगठन के प्रमुखों और प्रबंदकों की मानसिकता है। "कोई भी विकलांग लड़कियों को सताता नहीं हैं - दुनिया इतनी बुरी नहीं है", "उन्हें माहवारी और स्वच्छता के बारे में जानने की जरूरत है", "प्रेम और विवाह और प्रजनन के बारे में बात करें, लेकिन यौनसंबंध के बारे में नहीं" ऐसे बयान विकलांगता अधिकार संगठनों के प्रमुखों के साथ बातचीत करते वक्त हम सुनते हैं।

आश्चर्यजनक बात यह है कि, संगठनों के ये प्रमुख या तो गैर विकलांग हैं और उन्हें विकलांगता और यौन अधिकारों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण है, या विकलांग होते हुए भी इन्होने इन रूढ़ात्मक कलंकित विचारों को दृढ़तापूर्वक आंतरिककरण कर लिया है। यह आश्चर्य की बात है कि विकलांगता अधिकार आंदोलन और जो लोग अभिगम्यता और समावेशन के लिए बहुत दृढ़ता से वकालत करते हैं , वे अभी भी यौन शिक्षा, बुनियादी अधिकारों में सपने और इच्छाओं को शामिल करने के बारे में अभी भी आगामी नहीं हैं। ■

सामान्यता का पुनर्परिभाषण

डॉ.श्रुति
मोहपात्रा

सदियों से, शारीरिक अंतर ने सामाजिक संरचनाओं को निर्धारित किया है । कुछ निकायों को आदर्श के रूप में परिभाषित किया है, और जो इस आदर्श के बाहर हैं उन्हें "अन्य" माना जाता है, और इस निर्मित सामान्य स्थिति के बाहर के जीवन को अयोग्य माना जाता है। इस दृष्टिकोण को बदलने की जरूरत है, डॉ.श्रुति मोहपात्रा, सीईओ, स्वाभिमान बताती है ।

ही में मैंने KUB (किडनी और मूत्र मूत्राशय का अल्ट्रासाउंड) के लिए एक रेडियोलॉजिस्ट से मिली क्योंकि मेरा नियमित चिकित्सक शहर से बाहर था । एक त्वरित यात्रा एक लंबी नियुक्ति बन गई, जहां मैं अपने स्वास्थ्य की बजाय मेरे विकलांगता पर स्पष्टीकरण दे रही थी। और जब मैं उसे जानकारी दे रही थी, तब वह मेरे बजाय, मेरे माँ को देखकर, पूर्व-अल्ट्रासाउंड प्रक्रिया समझा रहा था। दूसरी घटना एक मॉल में कुछ ही दिनों के तुरंत बाद हुई, जब मैंने एक बिक्री सहायक से पूछा कि दर्पण कहां था। मेरी तरफ देखने के बजाय, उसने सीमा, जो मेरे व्हीलचेयर के पीछे थी, को जवाब दिया। मुझे तुरंत गुस्सा आया , लेकिन जल्द ही अपने गुस्से पर काबू करके मैं आत्मनिरीक्षण करने लगी । दोनों मामलों में, "सामान्य" लोगों को शायद लगा कि क्योंकि मैं व्हीलचेयर पर थी, मैं असमर्थ थी। नहीं मैं असमर्थ नहीं हूँ। चलने-फिरने के लिए व्हीलचेयर की उपयोग के आलावा , मैं किसी और के समान सामान्य हूँ।

इस ज़माने में, जब अधिकार आधारित कानून , सक्रिय मीडिया और समावेशी विकास एजेंडा हैं, इसके बावजूद ऐसे घटना कभी-कभी नहीं बल्कि नियमित रूप से क्यों हो रहे हैं? सदियों से, शारीरिक अंतर ने सामाजिक संरचनाओं को निर्धारित किया है कुछ निकायों को आदर्श के रूप में परिभाषित किया है, और जो इस आदर्श के बाहर हैं उन्हें "अन्य" माना जाता है, और यह "अन्यता" की हद इस पर निर्भर है कि कोई आदर्श से कितना हटकर है।

जैसे लेंनार्ड डेविस ने लिखा, एक विकलांग शरीर को ठाठ, सेक्सी और फैशन के रूप में न देखा जाता है, बल्कि एक अतिक्रमी और विकृत रूप में देखा जाता है। ऐसा करके, हमने एक कृत्रिम "सामान्य मानव प्रकार" का सृजन किया है जिसमें हम में से कुछ लोग बड़े अच्छी तरह समुचित हो जाते हैं और कुछ लोग नहीं । इस निर्मित सामान्य स्थिति के बाहर जीवन को अक्षम माना जाता है। इस दृष्टिकोण को बदलने की जरूरत है।

इस तत्य को समझना चाहिए कि विकलांगता काफी सामान्य और प्राकृतिक है। यह दुनिया भर में हर संस्कृति और समाज में होता है। यह हर किसी को प्रभावित करता है और कहने के लिए तो हर कोई किसी न किसी तरह विकलांग है । चश्मे का इस्तेमाल करने वाले व्यक्तिउनके बिना पढ़ने या देखने में , एक वृद्ध व्यक्ति छड़ी के बिना चलने में , और जिस व्यक्ति का किडनी प्रत्यारोपण हुआ है वह बॉविल मूवमेंट (Bowel movement) के लिए अपने नए किडनी के बिना, विकलांग है ।

जिस तरह हर व्यक्ति को अलग प्राकृतिक क्षमता और कौशल है, वैसे ही ज्यादातर लोगों को विभिन्न प्रकार की विकलांगता होती है। जब इस पर सहमति हो जाती है, तो रवैया बदल जाएगा। तभी कानून, नीतियां और एजेंडा को कार्रवाई में बदलने के लिए एक बुनियाद मिलेगी । ■

जिस तरह हर व्यक्ति को अलग प्राकृतिक क्षमता और कौशल है, वैसे ही ज्यादातर लोगों को विभिन्न प्रकार की विकलांगता होती है। जब इस पर सहमति हो जाती है, तो रवैया बदल जाएगा।

इंद्रधनुष

हममें से बहुत से लोग हमारे शिक्षा प्रणाली पर विलाप करते हैं कि वह काम नहीं करती है पर इसके आगे कुछ नहीं करते , लेकिन कुछ सुधारक-योद्धाओं ने अब अभिनव स्कूलीकरण प्रणालियों के बारे में सोचा हैं जो छात्रों के समग्र विकास और आजीवन योग्यता के लिए उन्हें तैयार करताहै, पता लगाती हैं डॉ. केतना.एल.मेहता संस्थापक न्यासी, नीना फाउंडेशन

डॉ.केतना.एल.
मेहता

सदियों से हमारी पारिवारिक परंपरा है कि हम अपने मातृभाषा में अखबार और पत्रिका की सदस्यता लें। हाल ही में, मैंने नियमित रूप से एक अग्रणी गुजराती साप्ताहिक, 'चित्रलेखा', पढ़ने का सचेत निर्णय लिया। हमेशा से ही इसकी साहसी और उग्र लेखों और समाचार कवरेज की गहराई को मैंने सराहा है। इसके नवंबर 2017 के अंक में, मैंने एक अद्भुत लेख ' लिव, स्टडी, ईट, ड्रिंक - आल फॉर फ्री' (Live, Study, Eat, Drink-all for free) पढ़ी जिसने मेरे मन को छू लिया और मेरे जिज्ञासा को बढ़ाया। यह भविष्य की शिक्षा की कहानी थी। लेख ने मुझे जेवियर नेएल, एक फ्रांसीसी करोड़पति और उसके द्वारा पेरिस में स्थापित स्कूल ''इकोल 42 एक्सपेरिमेंटल यूनिवर्सिटी' ('École 42 Experimental University') से परिचित करवाया। विश्वास कीजिये, यह 24 घंटे खुला है, कोई शिक्षक नहीं हैं, सबसे महत्वपूर्ण बात - कोई शुल्क नहीं है! छात्रों को कोई डिप्लोमा या डिग्री नहीं मिलता है। यह पूरी तरह से योग्यता आधारित है - कोई प्रवेश परीक्षा नहीं है,

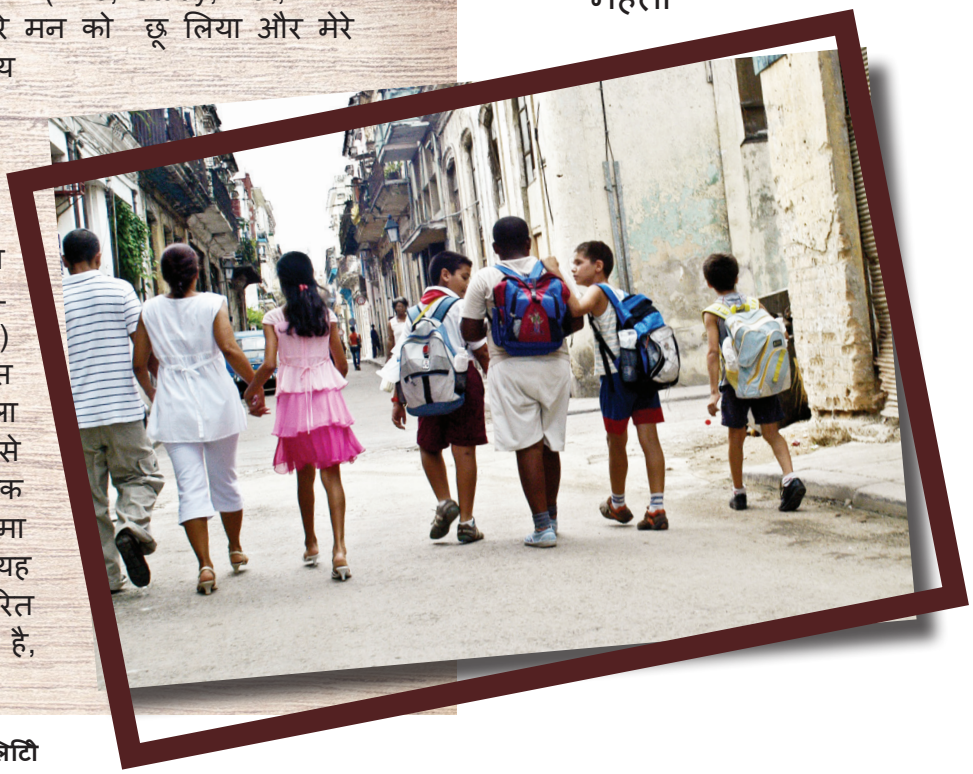

और छात्रों को ऑनलाइन गेम के माध्यम से उनके योग्यता के आधार पर चुना जाता है!

भारत में भी कट्टरपंथी विचारक हैं। हाल ही में, मैंने अपने छोटे भाई धवल (जो स्वयं एक रचनात्मक विज्ञापन व्यवसाय का नेतृत्व करते हैं) के साथ क्यूम्प्रो फाउंडेशन, मुंबई द्वारा आयोजित 'एक्सेलेंस क्वालिटी अवार्ड्स' के 23 वें संस्करण में भाग लिया। ज़िंदादिली, चुलबुली, जीवन से भरपूर, डिजाइनर और शिक्षाविद किरण बीर सेठी पुरस्कार विजेताओं में से एक थी। अहमदाबाद में रिवरसाइड स्कूल के संस्थापक, उन्होंने एक अद्वितीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त 'रिवरसाइड वेल-बीइंग करिकुलम' को विकसित किया है। यह पांच स्तरों पर इष्टतम कल्याण सुनिश्चित करता है : सामाजिक, भावनात्मक, शारीरिक, आध्यात्मिक और संज्ञानात्मक। वह भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में पथ निर्देशक है, 'सीख के रूप में शिक्षण' जिसमें छात्र एक अवधारणा, कौशल या विचार जिसे उन्होंने कक्षा में सीखा है अपने माता-पिता को सिखाते हैं। इस अभिनव पाठ्यक्रम का ढांचा प्रासंगिकता, कठोरता, रिश्तेदारी है। वे इसे बिना किसी समझौते के, छात्रों के आजीवनी समग्र विकास और योग्यता के लिए उचित शिक्षा मानते है।

हममें से बहुत से लोग हमारे शिक्षा प्रणाली पर विलाप करते हैं कि वह काम नहीं करती है पर इसके आगे कुछ नहीं करते। कुछ साहसी परिवार अपने बच्चों की रचनात्मकता की रक्षा के लिए होमस्कूलिंग का विकल्प चुनते हैं। कुछ सुधारक-योद्धा जैसे जेवियर नेएल और किरण बीर सेठी वास्तव में कार्य करते हैं!

मेरा प्रतिभाशाली 16 वर्षीय भतीजा देव (वह एक स्वयं सिखाया चित्रकार, कलाकार, फोटोग्राफर और पटकथा लेखक है) ने हमेशा अपने स्कूल को उबाऊ और ग़ैरदिलचस्प पाया। उसका मानना है कि छात्रों को वो चीज़ें पढ़ाया जाना चाहिए जो वे सीखना चाहते हैं और व्यावहारिक तकनीक,भाषा, संगीत, खेल, फोटोग्राफी, कला और विश्व दृश्य जैसे विषयों से विकल्प चुनने की अनुमति दी जानी चाहिए।

श्री विलियम वर्ड्सवर्थ, हम आपके कविता 'द रेयिनबो ' के वाक्य 'चाइल्ड इस द फादर ऑफ़ मेन '(Child is the Father of Man) से पूरी तरह सहमत हैं। बचपन के सभी व्यवहार और आदतों ने हमारे व्यक्तित्व और भविष्य को आकार देते हैं । हमारे संस्थानों की गुणवत्ता हमारे बच्चों की कल्पना के लिए अधिक रंग जोड़ने और इंद्रधनुष को नया स्वरूप देने की शक्ति रकती है। ■

> यह स्कूल 24 घंटे खुला है, कोई शिक्षक नहीं है, कोई प्रमाणीकरण नहीं, कोई प्रवेश परीक्षा नहीं, कोई शुल्क नहीं है! छात्रों को ऑनलाइन गेम के माध्यम से उनके योग्यता के आधार पर चुना जाता है!

CavinKare

16 வகை
அனைத்தும் சிறந்த சுவை

உங்கள் உணவை மேலும் சிறப்பாக்க,
நாங்கள் ஆவக்காய், தொக்கு, எலுமிச்சம்,
பூண்டு, தக்காளி, இஞ்சி போன்ற 16
சிறந்த ஊறுகாய் வகைகள் தருகிறோம்.
அத்தனையும் ருசித்திடுங்கள்.

MOST PEOPLE DON'T
REALISE THAT PUMPS ARE
EVERYWHERE
R.NO. 66062/96
Grundfos is committed to meeting the global energy challenge with the market's most efficient pumps.
For more information contact us:
salesindia@grundfos.com, serviceindia@grundfos.com
1800-345-4555 (Toll Free), in.grundfos.com, GrundfosIND, @GrundfosIND
be
think
innovate
GRUNDFOS